Daly College, Jr. School

हिन्दी कक्षा -२-ब

सामूहिक कविता

“ चींटी ”

हर पल चलती जाती चींटी,
श्रम का राग सुनाती चींटी।

कड़ी धूप हो या हो वर्षा,
दाना चुनकर लाती चींटी।

सचमुच कैसी कलाकार है,
घर को खूब सजाती चींटी।

छोटा तन, पर बड़े इरादे,
नहीं कभी घबराती चींटी।

नन्हे-नन्हे पैर बढ़ाकर,
पर्वत पर चढ़ जाती चींटी।

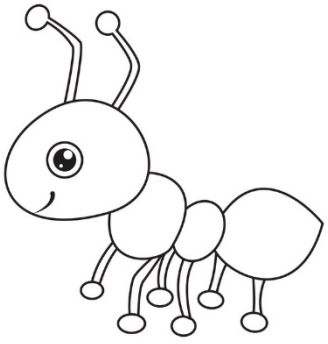

काम बड़े करके दिखलाती,
जहाँ कहीं अड़ जाती चींटी।

मेहनत ही पूजा है प्रभु की,
हमको यही सिखाती चींटी

कवि - प्रकाश

Daly College, Jr. School

हिन्दी कक्षा - २-अ

सामूहिक कविता

बाघ का बच्चा

रास्ता पक्का हो या कच्चा,
चलता उस पर बाघ का बच्चा।
कभी उछलता कभी कूदता,
धूम मचाता बाघ का बच्चा।

बाल पूँछ के और मूँछ के,
लहराता है बाघ का बच्चा।
पंजे अपने कहीं उड़ाता,
सुस्ताता है बाघ का बच्चा।

माँ जब चलती वह चल पड़ता,
कभी कहीं वह गिरता पड़ता।
पानी में भी उछल तैर कर,
चलता जाता बाघ का बच्चा।

बड़ा बहादुर बाघ का बच्चा,
घबराता ना बाघ का बच्चा।
घूम-घूम कर दूर-दूर तक,
हो आता है बाघ का बच्चा।

पेट पीठ पर भूरी काली,
धारी-धारी बड़ी निराली।
चलता आता चलता आता,
गुर्राता है बाघ का बच्चा। **कवि- केदारनाथ सिंह**

DC EDUCATION SINCE 1870	**Daly College Junior School ,Indore** **हिंदी - सामूहिक कविता पाठ**

नमस्ते , हम कक्षा दो 'द' के बच्चे आप सब के सामने एक कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं जिसका शीर्षक है - "चंदा मामा" इस कविता के कवि हैं 'शंकर विटनकर'

नील गगन के चन्दा जी,

ठाठ बड़ा दिखलाते हो,

सोने जैसा रूप लिए,

राजा बन इठलाते हो |

पंख नहीं तुमको फिर भी,

पंछी बन उड़ पाते हो,

झुंडों बीच सितारों के,

पक्षीराज बन जाते हो |

जंगल, नदी पहाड़ों पर,

घूमते रात बिताते हो,

याद से फिर भी हम सबके,

छत पर खेलने आते हो |

भैया तुम धरती माँ के,

मामा हमको लगते हो,

इसीलिए क्या प्यार से तुम,

देख हमें मुस्काते हो |

धन्यवाद

	Daly College Junior School ,Indore **हिंदी - सामूहिक कविता पाठ**

नमस्ते , हम कक्षा दो 'स' के बच्चे आप सब के सामने एक कविता प्रस्तुत करने जा रहे हैं जिसका शीर्षक है - फलों की दुनिया' इस कविता के कवि हैं 'अनंत प्रसाद' रामभरोसे

आओ चलें फलों के बाज़ार,

चीकू,केला, बेर, अनार |

नाज़ुक शहतूत के नख़रे चार,

संतरे, मोसंबी की आई बहार |

हापुस, लंगड़ा और दसारी,

फलों का राजा सब पैट भारी |

बेल, सेब और खरबूजा,

हरा- भरा देखो तरबूजा |

अंगूरों की बात निराली,

जामुन की है सूरत काली |

सीताफल, अमरूद,पपीता ,

अंजीर, कीवी हुए सभीता |

हर मौसम के फल तुम खाओ,

फल से ताकतवर तन तुम पाओ,

लेकिन यह ना कभी भुलाना,

साग,रोटी, डाल भी खाना |

साग, रोटी,दाल भी खाना |

धन्यवाद